मेति तथा कृषि एवं गन्ना विकास विभाग, झारखण्ड सरकार के सौजन्य से प्रकाशित
एक्सटेंशन रिफोर्म्स तकनीकी प्रसार पुस्तिका : 2/2008

झारखण्ड सरकार

बटेर पालन की प्रौद्योगिकी

"पालें बटेर, बटोरें फायदे ढेर"

राज्य स्तरीय कृषि प्रबंधन, प्रसार-सह-प्रशिक्षण संस्थान
(समेति)
कृषि भवन प्रांगण, काँके रोड, राँची (झारखण्ड)

परिचय

बटेर भूमि पर रहने वाले जंगली पक्षी होते हैं। ये उड़ नहीं सकते हैं ज्यादा दूरी के लिए और भूमि पर घोसलें बनाते हैं। उनके स्वादिष्ट मांस के कारण उनका शिकार किया जाता है। इस वजह से बटेरों की संख्या में बहुत कमी आ गई है। सरकार ने इसी वजह से वन्य जीवन संरक्षण कानून, 1972 के तहत बटेर के शिकार पर प्रतिबन्ध लगा दिया है।

बटेर पालन कम लागत, सुगम रख–रखाव तथा पालन–पोषण के साथ और बिना किसी धार्मिक प्रतिबंध के साथ सम्भव है। हम सभी इस बात को जानते हैं कि आहार को संतुलित बनाने के लिए पशुधन से प्राप्त होने वाले प्रोटीन जैसे–दूध, मांस, अंडे की जरूरत पूरी करने के लिए पशुओं की महत्ता सभी जानते हैं। बटेर कम लागत पर हमारे लिए मांस और अंडे की जरूरत पूरी करता है। इस वजह से यह कहना सही है कि **''पालें बटेर, बटोरें फायदे ढेर''**

नस्लें

बटेर को उनके पंखों के रंगों के आधार पर विभिन्न किस्मों में बाँटा जा सकता है। बटेर की नस्ले इस प्रकार है –

1. टाक्सिडो
2. फराओ
3. ब्रिटिश रेंज
4. इंगलिश सफेद
5. मांचुरियन गोल्डन

बटेर के अण्डे

बटेर के अंडो के बारे में कुछ तथ्य :

वजन – लगभग दस ग्राम

रंग – सफेद, जिस पर नीले धब्बे होते हैं।

उष्मायन काल – अठारह दिन

सेने के लिए तापमान

0 से 14 दिन – 66.50° एफ.

15 से 17 दिन – 68.50° एफ.

प्रजनन के लिए तीन मादा पर एक नर रखना चाहिए। बटेर पाँच से सात सप्ताह की उम्र में अंडा देना शुरू देती हैं। अंडो का वजन लगभग दस ग्राम तक होत अंडो का रंग सफेद होता है जिस पर नीले धब्बे होते हैं

अंडो को सेने के लिए तापमान और नमी पर खास तौ ध्यान देना चाहिए। शुन्य से चौदह दिनों तक 66.50° और नमी 87 प्रतिशत रखें। पंद्रह से सत्रह दिनों तापमान 68.50° एफ. और नमी 60 प्रतिशत रखें।

अंडो को चौदह दिनों तक उलटते–पलटते रहना जरूरी है। चौदह दिनों के बाद अंडों को हैचिंग मशी स्थानान्तरित किया जाता है। अठारह दिनों के बाद अं बटेर के चूजे बाहर आ जाते हैं।

बटेर के चूजे

बटेर के चूजे लगभग सात ग्राम के होते हैं। उनका आ बहुत छोटा होता है इसलिए उन्हें अच्छी देख–भाल आवश्यकता होती है। छोटे चूजों के लिए भोजन और उष्मा बहुत जरूरी है। चूजों को जमीन पर डीप लिट बैटरी ब्रूडर में रखा जा सकता है।

होवर या बैटरी ब्रूडर में भोजन, साफ पानी और तापमान की व्यवस्था करनी चाहिए। शुरू में होवर तापमान 35–370 से.ग्रे. होना चाहिए। बाद में इसे धीरे- घटाकर 20–290 से.ग्रे. तीन–चार सप्ताह की उम्र करना चाहिए। स्वस्थ्य व्यस्क बटेर पाने के लिए चूजे अच्छी देख–भाल जरूरी है।

बढ़वारी बटेर

बटेर के चूजे हल्के पीले रंग के होते हैं जिन पर भूरी धा होती हैं। दिखने में ये काफी कुछ टरकी के चूजे की होते हैं फर्क सिर्फ आकार में होता है। एक दिन के चूजे ग्राम के होते हैं। पहले कुछ दिनों में ये तेजी से बढ़ते चार सप्ताह की उम्र में पंख पूरी तरह विकसित हो जाते

प्रजनन के लिए तीन मादा पर एक नर रखना चाहिए। मादा बटेर पाँच से सात सप्ताह की उम्र में अंडा देना शुरू कर देती हैं। अंडो का वजन लगभग दस ग्राम तक होता है। अंडो का रंग सफेद होता है जिस पर नीले धब्बे होते हैं

अंडो को सेने के लिए तापमान और नमी पर खास तौर पर ध्यान देना चाहिए। शुन्य से चौदह दिनों तक 66.50° एफ. और नमी 87 प्रतिशत रखें। पंद्रह से सत्रह दिनों तक तापमान 68.50° एफ. और नमी 60 प्रतिशत रखें।

अंडो को चौदह दिनों तक उलटते–पलटते रहना बहुत जरूरी है। चौदह दिनों के बाद अंडों को हैचिंग मशीन में स्थानान्तरित किया जाता है। अठारह दिनों के बाद अंडों से बटेर के चूजे बाहर आ जाते हैं।

बटेर के चूजे

बटेर के चूजे लगभग सात ग्राम के होते हैं। उनका आकार बहुत छोटा होता है इसलिए उन्हें अच्छी देख–भाल की आवश्यकता होती है। छोटे चूजों के लिए भोजन और सही उष्मा बहुत जरूरी है। चूजों को जमीन पर डीप लिटर या बैटरी ब्रूडर में रखा जा सकता है।

होवर या बैटरी ब्रूडर में भोजन, साफ पानी और सही तापमान की व्यवस्था करनी चाहिए। शुरू में होवर का तापमान 35–370 से.ग्रे. होना चाहिए। बाद में इसे धीरे–धीरे घटाकर 20–290 से.ग्रें. तीन–चार सप्ताह की उम्र तक करना चाहिए। स्वस्थ्य व्यस्क बटेर पाने के लिए चूजों की अच्छी देख–भाल जरूरी है।

बढ़वारी बटेर

बटेर के चूजे हल्के पीले रंग के होते हैं जिन पर भूरी धारियाँ होती हैं। दिखने में ये काफी कुछ टरकी के चूजे की तरह होते हैं फर्क सिर्फ आकार में होता है। एक दिन के चूजे सात ग्राम के होते हैं। पहले कुछ दिनों में ये तेजी से बढ़ते हैं। चार सप्ताह की उम्र में पंख पूरी तरह विकसित हो जाते हैं।

आहार व्यवस्था

दस से बारह सप्ताह की उम्र तक बटेरों में शारी बढ़ोत्तरी पूरी हो जाती हैं। शुरू के तीन सप्ताह में ब की गति सबसे तेज होती है इसलिए आहार में 27 प्रति प्रोटीन एवं 2800 किलो कैलोरी ऊर्जा प्रति किलो दा होना चाहिए। तीन से छः सप्ताह के आहार में 24 प्रति प्रोटीन और 2900 किलो कैलोरी ऊर्जा प्रति किलो आह होना चाहिए। एक व्यस्क बटेर को एक दिन में चौद बीस ग्राम आहार की आवश्यकता होती है। बटेर पाल 60 से 70 प्रतिशत लागत आहार पर आती है।

बटेरों का आहार बाजार में उपलब्ध अच्छी कम्पनी कान्सन्ट्रट राशन का प्रयोग सफलता पूर्वक किया सकता है। आहार बनाते समय इनमें अन्य स्थानीय उप धान्य और धान्य अवशेष संघटको को निर्धारित मात्र मिलाकर विभिन्न वर्ग के बटेरों का सन्तुलित आहार त किया जा सकता है।

देख-भाल

बटेर के चूजों को तीन–चार सप्ताह के बाद ज्यादा ताप की जरूरत नहीं होती है। बढ़वारी चूजों की बैटरी ब्रूड वर्धनशील चूजों के लिए बने घर में स्थानान्तरित कर चाहिए। ब्रूडर में हर चूजे को 150 से 180 वर्ग से.मी. व लिटर में 200 से 250 वर्ग से.मी. स्थान प्रदान करना चा चार सप्ताह की उम्र में स्वजाति भक्षण से बचाव के ऊपर के चोंच को थोड़ा सा काट देना चाहिए।

पाँच सप्ताह की आयु के पश्चात भी बटेरों को पिंजरे फर्श पर रखा जा सकता है। लिटर की मोटाई दस से होनी चाहिए। एक बटेर के लिए 0.25 वर्ग फीट पर्याप्त अगर अण्डे देने वाले बटेर को पिंजरे में रखना है तो पि का आकार इतना होना चाहिए जिसमें एक नर और दोनों आ जाए।

बटेरों में लिंग की पहचान

बटेरों में चूजों की लिंग की पहचान एक दिन उम्र वाले में वेंट की परीक्षा द्वारा किया जा सकता है। इस कार्य के लिए अत्यन्त दक्ष व्यक्तियों की जरूरत होती है। तीन–चार सप्ताह की उम्र या व्यस्कों में उनके पंख के रंग के आधार पर नर एवं मादा की पहचान संभव है। नर के गर्दन के नीचे का पंख लाल–भूरा रंग का एवं मादा का हल्के सुर्भई रंग पर काले धब्बे होते है।

व्यस्क बटेरों का लिंग बटेरों के पिछले भाग को देखकर भी किया जा सकता है। नर पक्षी के गुदा के ऊपरी भाग में एक फूली हुई गोलाकार संरचना पाई जाती है जिससे सफेद झागदार पदार्थ निकलता है। मादा पक्षी का पिछला भाग हल्के पीले रंग का होता है।

बटेर में होने वाली बीमारियाँ

आम–तौर पर बटेरों में बीमारियाँ बहुत कम होती हैं। उनमें रोगों से लड़ने की क्षमता अन्य पक्षियों की तुलना में अधिक होती है। मुर्गियों में होने वाली बीमारियाँ बटेरों में नहीं पाई जाती हैं परन्तु उनके सम्पर्क में आने से वे आक्रांत हो जाते हैं। बटेरों में कीटाणु, विषाणु एवं फफूँदी जनित रोग कुछ इस प्रकार हैं –

क. मेरेक्स रोग ख. क्वेल ब्रोन्काइटिस

ग. काक्सीडियोसिस . घ. एस्परजिलोसिस आदि।

बीमारियों से बचाव के लिए अच्छा प्रबंधन बहुत जरूरी है। आहार खनिज और बिटामिन से पूर्ण होना चाहिए। बीमार पक्षियों को तुरन्त अलग कर देना चाहिए। अलग–अलग उम्र के बटेरों को अलग रखना उचित होता है। रोग मुक्त बटेरों को ही प्रजनन हेतु प्रयोग करना चाहिए।

बटेर पालन के फायदे

यह निश्चित है कि हमारे देश में बटेर पालन उद्योग को बढ़ाने की काफी संभावना है। किसानों के लिए मुर्गी पालन के क्षेत्र में एक नए विकल्प के रूप में बढ़ रहा है।

बटेर पालन के कुछ फायदे

आहार के रूप में प्रयोग किये जाने के अतिरिक्त बटे अन्य विशेष गुण भी हैं जो इसे व्यवसायिक तौर लाभदायक अण्डे तथा मांस के उत्पादन में सहायक ब हैं। इससे होने वाले फायदे निम्नांकित हैं :–

1. बटेर प्रतिवर्ष तीन से चार पीढ़ियों को जन्म दे सकने क्षमता रखता है।
2. मादा बटेर 45 दिन की आयु से ही अण्डे देना आ कर देती है और साठवें दिन तक पूर्ण उत्पादन स्थिति में आ जाती है।
3. अनुकूल वातावरण मिलने पर बटेर लम्बी अ तक अण्डे देते रहते हैं और मादा बटेर व औसतन 280 तक अण्डे दे सकती है।
4. एक मुर्गी के लिए निर्धारित स्थान में 8 से 10 बटेर जा सकते हैं। छोटे आकार के होने के कारण इ संचालन आसानी से किया जा सकता है। साथ बटेर पालन में दाने की खपत भी कम होती है।
5. शारीरिक वजन की तेजी से बढ़ोत्तरी के कारण ये सप्ताह में ही खाने योग्य हो जाते हैं।
6. बटेर के अण्डे और मांस में संतुलित मात्रा में अ अम्ल, विटामिन वसा और धातु आदि पदार्थ उप रहते हैं।
7. मुर्गियों की अपेक्षा बटेरों में संक्रामक रोग कम होत रोगों की रोकथाम के लिए मुर्गी पालन की तरह किसी प्रकार का टीका लगाने की आवश्यकता होती है।

लेखक :

डॉ० आलोक कुमार पाण्डेय

वरीय वैज्ञानिक–सह–सहप्राध्यापक

पशुपालन प्रसार शिक्षा विभाग

पशुपालन संकाय

बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, राँची, झारखण्ड

*प्रसार पुस्तिका में उल्लेखित विचार लेखक के हैं। किसी भी प्रकार के असंगत विचार प्रकाशक उत्तरदायी नहीं होंगे।